भक्तिमार्ग के क्रियाकर्म

ऑडिओ कैसेट नं.364, (तारीख- 3.11.97)

(प्राइमरी नॉलेज पर आधारित)

शिवबाबा की मुरली

इस देह को ही मिट्टी कहा जाता है। भारत की आदि सनातन देवी-देवता धर्म की परम्परा को छोड़कर, जितने भी दूसरे धर्म हैं, सब देहभान की मिट्टी में गढ़ जाते हैं, पूरा देहभान नहीं छोड़ पाते; क्योंकि मिट्टी का संग समझते हैं। एक भारत की परम्परा ऐसी है जिसमें योगाग्नि में आत्मा को तपाया जाता है और सारा देहभान जल जाता है। जलने के बाद क्या बचता है? राख बचती है। हड्डियों की भी राख हो जाती है। उसे भी ले जाकर नदी में या किसी तीर्थ में अर्पण कर देते हैं। कहते हैं कि वे फूल हैं। मतलब यह है कि आत्मा जब योगाग्नि में अपने सब पापकर्मों को भस्म कर देती है, तो दुःखदायी काँटे से चैतन्य फूल हो जाती है। भारत की परम्परा में आज भी उसका गायन है। इसे क्रियाकर्म के रूप में मनाते आते हैं। शरीर छोड़ने के बाद, देह को जलाने के बाद, चौथे रोज़ तक वह राख रूपी फूल ले जाकर नदी में बहाते हैं। भारत की परम्परा में जन्म से लेकर मृत्युपर्यंत तक जितने भी क्रिया-कर्मकांड हैं, पढ़े-लिखे लोग समझते हैं कि यह तो अंधश्रद्धा-अंधविश्वास है; क्योंकि सही अर्थ का पता नहीं है। वास्तव में भगवान जब इस सृष्टि पर आता है तो हमको सच्चा कर्मकांड करना सिखाता है और उन कर्मकांडों का रहस्य भी बताता है कि ये कर्मकांड असली रूप में किस समय की यादगार हैं? अभी, कलियुग के अन्त समय में जबकि परमपिता कलियुगी, तमोप्रधान, दुःखदायी मनुष्य-सृष्टि को सुखदायी सतयुग में पलटने के लिए आता है, तो सारी दुनियाँ का नया संस्कार होगा। ... वहाँ तो शरीर को जलाते हैं और यहाँ भगवान आकर देह-अभिमान को योगाग्नि में जलाते हैं, आत्मिक स्थिति में स्थित होना सिखाते हैं। आत्मभान में स्थित होना- यही वास्तव में देह-अभिमान को जलाना है। आत्मा की भी याद और साथ में परमपिता के स्वरूप की भी याद। यह आत्मा का स्वरूप प्रज्वलित करना और परमपिता से उसका मेल कराना- इसी में सब समस्याओं का समाधान छुपा हुआ है। पाँच विकार आते ही हैं देह-अभिमान से। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार- यही दुःख के मूल हैं। ये देह- अभिमान में समाए हुए हैं। इनको नष्ट करने का मूल मंत्र परमपिता आकर बताते हैं कि अपने को ज्योतिबिंदु आत्मा समझो और बिंदु-2 आत्माओं का जो बाप ज्योतिबिंदु शिव है, जिसका बड़ा रूप शिवलिंग बनाया हुआ है, उस ज्योतिर्लिंगम् को याद करो। बिंदु या टीका भृकुटि के मध्य में लगाने की बात नहीं है। जैसे गीता में श्लोक में बताया, मनुष्य जब अंतिम समय में प्राण छोड़ता है उस समय उसे "भ्रूवोर्मध्ये प्राणं आवेश्य सम्यक्" (गीता 8/10) अर्थात् भृकुटि के मध्य में प्राणों को सम्यक रूप से ध्यान करना चाहिए; क्योंकि जहाँ जिसका वास है, वहाँ वह जल्दी मिलेगा। तो यह प्रैक्टिस बड़ी सहज है। यह प्रैक्टिस शरीर छोड़ते समय नहीं की जा सकती, पहले से ही करनी पड़े। यह मन को एकाग्र करने की विधि है; क्योंकि मन-बुद्धि को ही आत्मा कहा जाता है। मनुष्य जब शरीर छोड़ता है तो यह नहीं कहते कि मन-बुद्धि यहाँ रह गई और आत्मा चली गई। नहीं, सारी कर्मेन्द्रियाँ मौजूद हैं, शरीर में ही हैं; लेकिन क्या चला गया? कौन-सी शक्ति निकल गई? जिसमें इस जन्म के अच्छे और बुरे संस्कार समाए हुए हैं, वह मन-बुद्धि रूपी आत्मा चली गई। आँखों की ज्योति, जो भृकुटि के मध्य में रहती है, वह निकल गई। आँखें बटन- जैसी हो जाती हैं। जैसे उनमें कोई रोशनी ही नहीं रही। वह रोशनी ही मन-बुद्धि रूपी आत्मा है। उसी के कॉन्सनट्रेशन का अभ्यास हमको पहले से करना पड़े। आने वाली जो मारामारी की दुनियाँ है, जहाँ अभी भी टेन्शन लगातार बढ़ता चला जा रहा है, उस दुनिया के लिए यह अभ्यास पहले से पक्का करना है। अपने ऊपर अटेन्शन रखने के लिए परमपिता आकर हमको यह तरीक़ा बताते हैं कि "आत्मिक स्थिति में स्थित होकर रहो"। इससे अखंड शान्ति मिलेगी, अखंड विश्वास पैदा होगा, विलपावर आएगी, स्थिति-परिस्थिति से मुकाबला करने की ताकत आएगी। कॉन्सनट्रेशन से इतनी शक्ति पैदा होती है कि सारी दुनियाँ एक तरफ़ हो जाए और एक आत्मा, जो आत्मिक स्थिति में स्थित है, जिसका गीता में गायन है"स्वरूपनिष्ठ", वह एक तरफ़ हो जाए, तो सारी दुनियाँ का मुक़ाबला करने की विलपावर उसमें पैदा हो सकती है। अर्जुन ने भगवान से पूछा- भगवान, यह मन तो कंट्रोल में नहीं आता। यह मन ऐसा घोड़ा है जिसको नियंत्रित नहीं किया जा सकता। "चंचलम् हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवत् दृढम्। तस्य अहम् निग्रहम् मन्ये वायोः इव सुदुष्करम्" (गीता 6/34) तब भगवान ने कहा, इसके दो तरीक़े हैं- "अभ्यासेन तु कौन्तेय, वैराग्येण च गृह्यते" (गीता 6/35)। बार-2 आत्मिक स्थिति का अभ्यास करो। अनेक जन्म लिए हैं, अनेक आत्माओं का संग किया है, अनेक प्रकार से उनके साथ रंग में रंगे हैं तो वे बातें मन में याद तो आएँगी। भाँति-2 के पुरुष, भाँति-2 के वायुमंडल, भाँति- 2 की सीन-सीनरीज़ स्वप्न में भी आएँगी, संकल्प में भी आएँगी; लेकिन करना क्या है? उन सबसे बुद्धियोग हटाकर आत्मिक स्थिति में स्थित हो जाना है। मैं ज्योतिबिंदु सितारा आत्मा हूँ, परमपिता का बच्चा हूँ- बार-2 अभ्यास करने से अन्त में यह मन-बुद्धि रूपी आत्मा स्थित हो जाएगी और मन-बुद्धि जब एकाग्र हो जाती है तो परमपिता परमात्मा शिव के स्वरूप को जल्दी पहचान सकती है। दूसरा तरीक़ा "वैराग्येण च गृह्यते", जब तक इस देह और देह के संबंधियों की दुनियाँ से पूरा वैराग्य नहीं आया है तब तक आत्मा स्थिर भाव को प्राप्त नहीं कर सकती और यह बात शक्तिराम शर्मा के अन्दर सभी ने अनुभव की कि शरीर छोड़ने से कुछ दिन पहले से ही वह यह कहते रहे कि अब हमारी बुद्धि कहीं नहीं जा रही है। मैं और मेरा परमपिता

परमात्मा शिव। किसी में कोई आसक्ति नहीं- ऐसी आत्मा जब शरीर छोड़ेगी तो 'अन्त मते सो गते ज़रूर होगी'। मते माना बुद्धि। अन्त समय में बुद्धि जहाँ पहुँचती है वहीं उसकी गति हो जाती है मतलब यह है कि जहाँ कहीं भी इस सृष्टि पर कलियुग के अन्त में जबकि ऐटमिक एनर्जी इस सृष्टि को ख़लास करने के लिए तैयार हो चुकी है और नई सृष्टि बनाने के लिए परमपिता इस सृष्टि पर आ चुका है, उस परमपिता के पास वह भोली आत्मा अवश्य पहुँचेगी। किसी भी देहधारी में कोई लगाव है ही नहीं, तो आत्मा की गति कहाँ होगी? जहाँ लगाव होगा, वहीं जाएगी ना और जहाँ जाएगी, जिसके पास जाएगी, उसी के कार्य में सहयोगी बनेगी। शरीर का कर्मभोग तो हरेक को भोगना पड़ता है। कड़े-से-कड़ा कर्म-बंधन भोगना पड़े; क्योंकि अनेक जन्म लिए हैं, उनका हिसाब- किताब चुक्तू करना ही पड़ता है। हिसाब-किताब चुक्तू होने के बाद ऐसे नहीं कि इस जन्म की बीमारियाँ फिर अगले जन्म में जाती ही जाती हैं। अगर वह विकर्म भस्म हो गया तो वह हिसाब-किताब भी भस्म हो गया। आत्मा को शरीर भी ऐसा मिलना है, जिस स्वस्थ शरीर से स्वस्थ रूप में पुरुषार्थ कर सके। पुरुष+अर्थ =पुरुषार्थ। पुरी शेते, पुरी माना नगरी और शेते माना शयन करने वाली। यह शरीर ही पुरी है और इसमें विश्राम करने वाली आत्मा है। इसमें वह सुख-शान्ति में विश्राम करे वही ज़िंदगी है। अगर आत्मा इस शरीर में रहते दुःख और अशान्ति भोगती है तो उसे विश्राम करना नहीं कहा जाएगा। अभी परमपिता शिव राम- कृष्ण की सतयुग-त्रेता वाली दुनिया बनाने के लिए आया हुआ है, जिसमें सुख होगा, दुःख नहीं होगा; लेकिन उसके लिए 'अन्त मते सो गते' वाली प्रैक्टिस अभी से करनी पड़े। हम अपनी मन्सा ऐसी बना लें कि कोई हमको कैसी भी बात सुनाए, हम डिस्टर्ब न हों। जो गीता में बताया है, "यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः" (गीता 12/15) अर्थात् जिससे कोई उद्वेग को प्राप्त न हो, अशान्ति को प्राप्त न हो और जो किसी को अशान्ति प्राप्त न कराए, वही स्वरूपनिष्ठ है। अशान्ति को प्राप्त कराएगा तो खुद भी अशान्ति पाएगा। दूसरों को सुख-शान्ति देने के निमित्त बनेगा तो खुद भी सुख-शान्ति में रमण करेगा। तो ऐसी स्थिति कैसे बनाई जाए? आत्मिक स्थिति ही एक उपाय है। उसका अभ्यास करना है। जिस उपाय को प्राप्त करने से आत्मा की ऐसी स्थिति बन जाएगी कि जैसे कोई हमारे विरोध में बोल रहा है और हम सुनते हुए न सुनें। एक कान से सुना, दूसरे कान से निकाला। जैसे कि किसी ने हमको दुःख देना चाहा; लेकिन हमने उसके दुःख देने को ग्रहण नहीं किया। कोई हमको लाल-पीली आँखों से देखता है, हमने उसके भाव को परख लिया, यह क्यों देखता है? पूर्वजन्मों का कौन-सा ऐसा हिसाब-किताब है जो यह हमसे ले रहा है? तो प्रतिफल में हम अपनी आँख लाल-पीली नहीं करेंगे। हमारा हिसाब-किताब पूरा हो जाएगा, उसका भी हिसाब-किताब पूरा हो जाएगा- ऐसा भाव रखना पड़े। बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो, बुरा मत बोलो और अब तो वह स्टेज होनी चाहिए कि बुरा मत सोचो। हर आत्मा के प्रति शुभ संकल्प करना है; क्योंकि पहले मन के अंदर बात आती है फिर वाचा में आती है फिर कर्मणा में आती है। मन्सा का कोई विकर्म नहीं बनता, पाप कर्म नहीं बनता; लेकिन वाचा और कर्मेन्द्रियों में अगर कोई बात ऐसी आ जाती है जिससे दूसरे को दुःख होता है तो उससे पाप बन जाता है। उससे बचे रहने के लिए सिर्फ़ एक ही सबसे बड़ा उपाय है- निःसंकल्पी स्टेज। मैं आत्मा ज्योतिबिंदु, मैं आत्मा स्टार, जिस स्टार की रोशनी इन आँखों से निकल रही है- इस स्थिति में स्थित हो जाना। हम कितना भी अच्छे-से-अच्छा सोचें; लेकिन अगर हमारे पूर्वजन्मों के हिसाब-किताब ख़राब होंगे तो अच्छे-से-अच्छा सोचने के बावजूद भी हमको प्रतिफल में श्रेष्ठता नहीं मिलेगी जब तक पूर्व जन्मों का हिसाब-किताब पूरा नहीं हो जाता। हम कितना भी बुरे-से-बुरा सोचें; लेकिन जिसका हम अकल्याण चाहते हैं अगर उसका पुण्यकर्म है तो हमारे कितना भी सोचने के बावजूद भी उसका अकल्याण नहीं होगा मतलब यह है कि सिर्फ़ हमारे करने के ऊपर नहीं है। इसलिए बोला जाता है "बनी-बनाई बन रही, अब कछु बननी नाय।" कोई आदमी जीवनभर किसी का कल्याण चाहता है और वह व्यक्ति प्रतिफल में उसको सारा जीवन उल्टा ही बोलता है- इसको पूर्वजन्म का हिसाब-किताब न कहा जाए तो क्या कहा जाए! इसलिए कभी घबराना नहीं चाहिए। हर अति का अन्त हो जाता है। कोई भी प्रकार की अति, अन्त होने की निशानी है। अभी मानसिक तनाव दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। अथाह धन-सम्पत्ति कमाकर रखी हुई है। स्वास्थ्य के लिए ढेर सारी दवाइयाँ रखी हुई हैं। बड़े लम्बे-चौड़े पारिवारिक सम्बंध हैं। संबंध तो होते ही हैं सुख लेने अथवा देने के लिए। "बी" साइड (कैसेट) अभी सब प्रकार के सम्बन्धों से मिलने वाले सुखों से आदमी का विश्वास उठता जा रहा है। उसका रिज़ल्ट है- छोटे-2 कुटुम्ब होते जाते हैं। पहले ऐसा नहीं था। बड़े-2 परिवार होते थे। एक-2 परिवार में सौ-सौ व्यक्ति पलते थे। एक चूल्हे पर रोटी बनती थी। अभी भी ऐसे प्रायः लोप परिवार हैं। जैसे गीता में कहा है- यह देवी-देवता सनातन धर्म प्रायः लोप हो जाता है। इसका मतलब यह नहीं कि बिल्कुल लोप हो जाता है। अभी भी भारतवर्ष में कहीं-न-कहीं ऐसे-2 विरले परिवार हैं- जिनमें एक मुखिया, अनेक बेटे-बेटियाँ, पुत्र-प्रपौत्र और उनकी बहुएँ हैं, फिर भी मजाल है कि कोई सदस्य उस मुखिया के बरख़िलाफ चला जाए। एक धर्म, एक भाषा, एक मत, एक कुल। किसी प्रकार का कोई भी व्यभिचार नहीं हो सकता। एक/दूसरे के प्रति नाजायज़ किसी में कोई लगाव नहीं हो सकता। कितनी सुख-शान्ति लगी पड़ी है। प्योरिटी से ही यूनिटी बनती है और प्योरिटी कब आती है? प्योरिटी आती है कॉन्सनट्रेशन से। दुनियाँ में बड़े-2 तनबल वाले बैठे हुए हैं, जिनका तन बहुत स्वस्थ है, पहलवान-से-पहलवान हैं। बड़े-2 धन वाले बैठे हुए हैं, बडे-2 पूँजीपति हैं, मल्टीमिलियनेयर्स हैं। धनबल की जैसे अति लगी पड़ी है और जनबल- बड़े-2 उनके परिवार हैं, बड़े-2 सम्बन्धी हैं ऊँचे-से-ऊँचे ओहदों पर। ढेर सारे हुजूम उनको मानने वाले हैं मतलब जनबल भी बहुत विस्तार में फैला हुआ है। तनबल भी है, धनबल भी है, जनबल भी है; लेकिन इसके

बावजूद भी बहुत दुःखी-अशान्त हैं। क्यों? क्योंकि मनबल, आत्मिक शक्ति, जो सबसे बड़ी चीज़ है, वह क्षीण हो चुकी। आज आदमी बैंक में पैसा इकट्ठा कर रहा है, उसका ढेर बना रहा है, तनबल एकत्र कर रहा है और जनबल बना रहा है; लेकिन मनोबल के लिए कोई प्रयास नहीं करता। मनोबल की क्या हालत है? सुबह से लेकर शाम तक मन चारों तरफ भटकता रहता है। जब चारों तरफ़ मन भटकता रहेगा, रात में सोते समय स्वप्न में भी मन-बुद्धि भटकती है, 24 घण्टे जब मन-बुद्धि का बिखराव होगा तो रिज़ल्ट क्या आएगा? मनोबल, आत्मिक बल क्षीण होगा, विलपावर घटती जाएगी। अगर विलपावर घट गई तो कितना भी तनबल, जनबल व धनबल हो, सब बेकार। व्हिक्टोरिया के वज़ीर के पास मनोबल था तो महारानी व्हिक्टोरिया का वज़ीर बन बैठा। बाबर के पास मनोबल था तो सिपाही से बढ़ करके भारत का सम्राट बन बैठा। अगर मन की पावर एकत्र की तो सब कुछ एकत्र किया और मन की पावर क्षीण कर ली तो कितना भी हम तनबल, धनबल, जनबल इकट्ठा करने में समय लगा दें, सब व्यर्थ हो जाता है। अन्त में रिज़ल्ट निकलता है- हार्ट फेल। जो योगी होते हैं, स्वरूपनिष्ठ होते हैं, आत्मिक स्थिति में स्थित रहने का प्रयास करते हैं, उनका कभी हार्ट फेल नहीं हो सकता। उनका हार्ट बहुत मज़बूत बन जाता है; क्योंकि कॉन्सनट्रेशन से श्वास-प्रश्वास की प्रक्रिया बहुत धीमी हो जाती है। ऐटमिक विस्फोट भी होंगे; क्योंकि पिछले 60 वर्षों में ही ये ऐटमिक एनर्जी ईजाद हुई। उसके पहले ईजाद नहीं हुई। नई दुनियाँ बनाने वाला इस सृष्टि पर आ जाता है तो पुरानी दुनियाँ को ध्वंस करने का सामान भी तैयार हो जाता है। ये स्थापना और विनाश, दोनों साथ-2 चलते हैं। नए विश्व का ऐसा संगठन जिसमें धर्मसत्ता-राज्यसत्ता एक हाथ में हो। एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा, एक मत, एक कुल होगा तो सुख-शान्ति होगी या दुःख- अशान्ति होगी? ज़रूर सुख-शान्ति की दुनियाँ बनेगी। अभी भारत में क्या हाल है? भारत जैसे छोटे से देश में जितनी भाषाएँ पनप रही हैं और उन भाषाओं को लेकर जितना झगड़ा फैला हुआ है उतना किसी देश में नहीं फैला हुआ है। छोटे से देश में जितना राज्यवाद को लेकर झगड़ा चल रहा है उतना किसी देश में नहीं। यह भारत देश ही है जिसमें दुनियाँ के सब धर्म घुसे पड़े हैं। दुनियाँ के अंदर भारत की राजधानी दिल्ली ही एक ऐसा शहर है जिसमें ज़्यादा से ज़्यादा परसेन्टेज में हर धर्म की आत्माएँ रही पड़ी हैं, अपना-2 वर्चस्व जमाय बैठी हैं। तो अनेक धर्मों के आधार पर अशान्ति फैलेगी या शान्ति फैलेगी? सब अपनी-2 धारणाएँ स्थापन करना चाहते हैं, धर्म माना धारणा। अब वे धारणाएँ कितनी सत्य हैं, कितनी असत्य हैं यह तो जब परमपिता-परमात्मा इस सृष्टि पर प्रत्यक्ष हो तब ही पता चलेगा। वह ऊँचे-ते-ऊँचा बाप कौन है, जिसको सारी सृष्टि नमन करती अथवा मानती है? आदि में ज़रूर कोई ऐसा मानव रहा होगा जो हर धर्म में माना जाता है। वह ज़रूर एक ही होना चाहिए। मुसलमानों में उसको "आदम" कहते हैं। अंग्रेज़ों में उसको "ऐडम" कहते हैं। जैनियों में उसको "आदिनाथ" कहते हैं और हिन्दुओं में"त्वम् आदिदेवः पुरुषः पुराणः" (गीता 11/38), आदिदेव शंकर के रूप में माना जाता है। जो आदि है वही अन्त कराने वाला है। आदि सो अन्त। यादगार में क्या बोला जाता है? हर-हर, बम-बम। दोनों कार्य करता है। नई सृष्टि आदि करने के लिए पापों का हरण कर लेता है। आत्मिक स्थिति का अभ्यास सिखाकर और बमों का विस्फोट कराकर सारी सृष्टि का संहार करा देता है। नहीं तो दुनियाँ सुधरने वाली नहीं है। नई सृष्टि में थोड़े लोग होंगे और आज इस पुरानी सृष्टि में ढेर लोग हैं। कहते हैं- एक-2 बूँद से सागर भर जाता है। मुट्ठी भर आत्माएँ, जो इस देवी-देवता सनातन धर्म का फाउंडेशन डालने वाली हैं, हर धर्म में माला के रूप में मानी जाती हैं। सब धर्म में माला जपी जाती है। माला के मणके आत्माओं की यादगार हैं। वे आत्मा रूपी मणके हर धर्म में स्मरण किए जाते हैं। क्यों स्मरण किए जाते हैं? ज़रूर उन आत्मा रूपी मणकों ने ...ऐसा संगठन संसार में तैयार किया है, जो सारे विश्व को मान्य हो। चाहे किसी भी धर्म के चुने हुए श्रेष्ठ लोग हों, एक ही ज्ञान के सूत्र में वे सब मणके बँधे हुए हैं। अभी यह कार्य चल रहा है। ज्ञान के आधार पर उस निराकार ज्योतिबिंदु परमपिता शिव को, जो इस सृष्टि पर आकर साकार बनता है अर्थात् किसी साधारण मनुष्य तन में प्रवेश करता है, गीता ज्ञान सुनाता है, पहचाना जा सकता है। अभी भी टाइम बहुत थोड़ा है। अभी राजनीति में दम नहीं रहा है। राजनीति एकदम अस्थिर हो चुकी। देहधारी धर्मगुरुओं से लोगों की आस्था उठ चुकी है; लेकिन हर मनुष्य आत्मा को जन्म से ही लेकर ईश्वर से एक दात मिलती है। कौन-सी दात? वरदान कहो, दात कहो, प्राप्ति कहो। वह प्राप्ति है- बुद्धि। हर मनुष्य आत्मा को फैसला करने के लिए अपनी-2 बुद्धि मिली हुई है। राइट क्या है? रॉंग क्या है? परमपिता शिव से हमें जन्म से ही जो चीज़ मिली हुई है उसकी क़दर हमको पहले करनी चाहिए। हमको कोई बात ग्रहण करने से पहले अपनी बुद्धि से फ़ैसला करना है। समाज, राज्य व राजनीति किस तरफ़ जा रही है? ये सब नहीं देखना है। अपनी बुद्धि से निर्णय लेना है कि हमको क्या करना है और क्या नहीं करना है? तुण्डे-2 मतिर्भिन्ना। अनेक मठ हैं, अनेक पंथ हैं, अनेक राज्य हैं, अनेक धर्म हैं, अनेक मतमतान्तर हैं। उन सबके बीच में हमको फैसला करना है- क्या राइट है? एक बात निश्चित है कि परमपिता शिव इस सृष्टि पर आएगा तो सारी सृष्टि को संदेश ज़रूर पहुँचता है। किस बात का? कि इस सृष्टि को सुधारने वाला इस सृष्टि पर आ चुका। अब अंतिम समय है। इस पतित दुनियाँ को सुधारने की किसी में ताक़त नहीं, सब थक चुके हैं। इब्राहीम आए, बुद्ध आए, क्राइस्ट आए, विवेकानंद आए, रामकृष्ण आए, गाँधीजी आए और सब इस सृष्टि के काल के गाल में समा गए। दुनियाँ नीचे ही गिरती चली गई। आपसी स्नेह, सहयोग, सौहार्द सब ख़लास होता चला गया। अब बाप आत्मा-2 भाई-2 बनाने के लिए आया हुआ है। चाहे हिंदू हो, मुसलमान हो, सिक्ख हो, ईसाई हो, हैं तो सब आत्मा। रूह तो सबके अंदर है। रूहों में अलग-2 संस्कार भरे हुए हैं; लेकिन सब रूहें उस सुप्रीम रूह की संतान हैं। मनुष्य गाते हैं- हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आपस में सब

भाई-2। जब सब आपस में भाई-2 होंगे तो ज़रूर कोई एक बाप भी इस सृष्टि पर रहा होगा ना! उस बाप का ही यादगार हर धर्म में माना जाता है- ऐडम, आदम, आदिदेव, आदिनाथ के रूप में। वही रूप धारण कर परमपिता शिव इस सृष्टि पर आता है। जिसकी ढेर की ढेर नग्न मूर्तियाँ सिर्फ़ देश में ही नहीं, विदेशों की खुदाइयों में भी, ग्रीस में, मेसोपोटामिया में, सिंध घाटी में मिली हैं। उनको जैनी लोग- "तीर्थंकर"कहते हैं और हिन्दुओं में उनको "शंकर" कहते हैं। वह नग्न मूर्ति इस बात की यादगार है कि उनको देहभान की स्मृति नहीं है। आत्मिक स्मृति में स्थित है। देह रूपी वस्त्र जैसे याद ही नहीं है। इसलिए उनको वस्त्र पहने हुए नहीं दिखाया जाता। देहभान से ही सारे दुःख पैदा होते हैं। तो अभी वह परिक्रिया सिखाने के लिए शंकर द्वारा स्वयं परमपिता शिव इस सृष्टि पर उतरा हुआ है। चाहे अंधा हो, लूला हो, लँगड़ा हो, धनी हो, ग़रीब हो, किसी भी धर्म का हो, किसी भी जाति का हो परमात्मा के दरबार में समझने के लिए सबको बराबर दात मिली हुई है। सब समझ सकते हैं। ईश्वर का ज्ञान किसी एक को पल्ले पड़े, दूसरे को नहीं, ऐसी बात नहीं है। अन्त समय में, जब लास्ट ऐटमिक विस्फोट होंगे, उस समय तक तो सारी दुनियाँ नम्बरवार मान ही लेगी; लेकिन पहले से जो पुरुषार्थ करते हैं उनके ऊपर परमपिता शिव की विशेष मेहर होती है और वे आत्मिक रूप में स्थित होने वाले बच्चे, आने वाली राम-कृष्ण की दुनियाँ में सुख भोगते हैं, जिसे स्वर्ग कहा जाता है। ऊपर किसी लोक में स्वर्ग नहीं होता। इसी सृष्टि पर, इसी भारत में स्वर्ग था। स्वयं भगवान ने आकर नर्क को स्वर्ग बनाया था। राम-राज्य का कितना गायन है। उस राम-राज्य की स्थापना परमपिता शिव सुप्रीम सोल ज्योतिबिंदु ही आकर करते हैं। आज की दुनियाँ में है रावण राज्य। रावण को दस सिर दिखाए जाते हैं माना इस दुनियाँ में अनेक मतमतान्तर हैं। अब वह अनेक मतमतान्तर की दुनियाँ, दस सिरों वाली रावण राज्य की दुनियाँ ख़लास होने वाली है और एक राम का राज्य स्थापन होने वाला है। इस सृष्टि पर राम की भी आत्मा मौजूद है, कृष्ण की भी आत्मा मौजूद है; लेकिन किसी मनुष्य रूप में है। जैसा गीता में कहा गया- "मुझ साधारण रूप में आए हुए को मूढ़मति पहचान नहीं पाते।" सिर्फ़ राम-कृष्ण की ही आत्माएँ नहीं, अपितु इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट, गुरु नानक, जितने भी बड़े-2 धर्मपिताएँ हुए हैं, वे सब इस सृष्टि पर मौजूद हैं; लेकिन साधारण चोले में। वे महान-2 हस्तियाँ जब परमपिता-परमात्मा शिव को पहचानेंगी तो सब उनके सहयोगी बन जाएँगे और अपना-2 सुख-शान्ति का वर्सा उनसे प्राप्त करेंगे।

ओमशान्ति।